

२६ ॥धर्मचक्रप्रवर्तनपरिवर्तः षड्विंशः॥

parivarta *m* - вращение, круговое движение; раздел книги; *buddh.* - поворот колеса учения.
(отрывок)

इति हि भिक्षवस्तथागतो रात्र्याः प्रथमे यामे तूष्णीभावेनाधिवासयति स्म।

yāma *m* - ночная стража; восьмая часть суток (3 часа);

रात्र्या मध्यमे यामे संरञ्जनीयां कथां प्रवर्तयति स्म।

saṃrañjanīya *buddh.* - учтивый, приятный, доброжелательный; сообразный с (правильным поведением);

रात्र्याः पश्चिमे यामे पञ्चकान् भद्रवर्गीयानामन्त्र्यैतदवोचत्

bhadravargīya *buddh. m pl.* - пять первых учеников Будды;

-vargīya - принадлежащий к к.-л. группе, классу, категории;

ā√mantraya *Ā.* - обращаться, окликать, звать;

- द्वाविमौ भिक्षवः प्रव्रजितस्यान्तावक्रमौ।

anta *m* - конец; край, крайность; предел;

pra√vraj I P. - сделаться аскетом;

akrama - не происходящий последовательно; *m* путаница, беспорядок, замешательство;

यश्च कामेषु कामसुखल्लिकायोगो हीनो ग्राम्यः पार्थग्निको नालमार्योऽनर्थोपसंहितो नायत्यां ब्रह्मचर्याय न

निर्विदे न विरागाय न निरोधाय नाभिज्ञाय न संबोधये न निर्वाणाय संवर्तते।

sukhallikā *f* - *buddh.* удовольствие, счастье;

grāmya - деревенский, грубый, примитивный;

pṛthag-jana - простой человек, обычный человек; pāthagjanika - принадлежащий простому человеку;

upasaṃhita (p.p. om upasaṃ√dhā) - связанный, сопровождаемый, имеющий ч.-л.;

āyati *f* - будущее;

nirvid (nirvidā - *buddh.*) *f* - отвращение (к мирскому);

virāga *m* - равнодушие, безразличие, бесстрашие; *buddh.* неисчислимое количество;

nirodha *m* - обуздывание, заточение, окружение, задержка, помеха, препятствие, подавление, угнетение, уничтожение;

abhijñā *f* - высшее или сверхъестественное знание, интуиция (обычно называют пять или шесть -

divyacakṣus, divyaśrotra, paracittajñāna, pūrvaṇivāsānusmṛti, ṛddhi, āśravakṣayaññāna);

saṃ√vart I P.Ā. - *buddh.* направляться, вести, быть благоприятным для ч.-л. (+Dat.);

या चेयममध्यमा प्रतिपदात्मकायक्लमथानुयोगो दुःखोऽनर्थोपसंहितो दृष्टधर्मदुःखश्चायत्यां च दुःखविपाकः। या

amadhya *m* *buddh.* - излишний, непомерный, чрезмерный, крайний, исключительный;

pratipad, pratipadā *f* *buddh.* - образ действий, поведение, образ действия; (amadhyaṃ pratipadā - чрезмерная аскеза);

anuyoga *m* *buddh.* - привязанность, склонность;

klamatha *m* - усталость, истощение, утомление, изнеможение;

dr̥ṣṭadharmā *m* *buddh.* - видимый мир; эта текущая жизнь;

vipāka *m* - приготовление пищи, созревание; результат, следствие, последствие, награда; воздаяние;

एतौ च भिक्षवो द्वावन्तावनुपगम्य मध्यमयैव प्रतिपदा तथागतो धर्मं देशयति

√deśaya *buddh.* - учить, сообщать; показывать;

-यदुत सम्यग्दृष्टिः सम्यक्संकल्पः सम्यग्वाक् सम्यक्कर्मन्तः सम्यगाजीवः सम्यग्व्यायामः सम्यक्स्मृतिः

सम्यक्समाधिरिति।

saṃkalpa *m* - решение, решимость; воля, желание, мысли;

karmānta *m* - работа, дело, действие; завершение дела;

ājīva *m* - средства к существованию, пропитание;

vyāyāma *m* - напряжение, усилие;

smṛti *f* - священное предание; заповедь; воспоминание, предание; *buddh.* сознательность, осознанность, памятование;

samādhi *m* - сосредоточение, благоговение, благочестие;

चत्वारिमानि भिक्षव आर्यसत्यानि। कतमानि चत्वारि?

दुःखं दुःखसमुदयो दुःखनिरोधो दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपत्।

samudaya *m* - совокупность составляющих элементов, причина возникновения ч.-л.; собрание, объединение, соединение; успех, удача, доходы, выгода;

nirodha *m* - обуздывание, заточение, окружение, задержка, помеха, препятствие, подавление, угнетение, уничтожение;

तत्र कतमद् दुःखम्? जातिरपि दुःखं जरापि दुःखं व्याधिरपि दुःखं मरणमपि अप्रियसंप्रयोगोऽपि

प्रियविप्रयोगोऽपि दुःखम्।

jarā *f* - старость, дряхлость;

vyādhi *m* - болезнь;

samprayaoga *m* - объединение, связь; применение, употребление;

viprayoga *m* - разлука;

यदपि इच्छन् पर्येषमाणो न लभते तदपि दुःखम्।

संक्षेपात् पञ्चोपादानस्कधा दुःखम्। इदमुच्यते दुःखम्।

samkṣepaṇa, samkṣepatas, samkṣepād *adv.* - вкратце, кратко, одним словом;

upādāna *n* - материальная причина; *buddh.* цепляние за жизнь;

skandha *m* – плечо; ствол дерева, толстая ветвь; раздел, глава; масса, большое количество; пять объектов чувств; *buddh.* пять составных элементов бытия, пять причинно обусловленных компонентов всего сущего: (gūra *форма*, vedanā *чувство*, sañjñā *представление*, saṃskāra *совокупность мысленных построений*, vijñāna *сознание*);

pañca-upādāna-skandha - пять причинно обусловленных компонентов всего сущего, благодаря которым живые существа цепляются за жизнь;

तत्र कतमो दुःखसमुदयः?

येयं तृष्णा पौनर्भविकी नन्दीरागसहगता तत्रतत्राभिनन्दिनी अयमुच्यते दुःखसमुदयः।

tṛṣṇā *f* - жажда, желание, алчность;

paunarbhavika *buddh.* - имеющий отношение к повторному рождению;

nandī *f* - радость;

sahagata - соединенный, сопровождаемый, вместе с ч.-л.

abhinandin - находящий удовольствие в ч.-л., радующийся; желающий ч.-л.;

तत्र कतमो दुःखनिरोधः?

योऽस्या एव तृष्णायाः पुनर्भविक्या नन्दीरागसहगतायास्तत्रतत्राभिनन्दिन्या जनिकाया निर्वर्तिकाया अशेषो

विरागो निरोधः अयं दुःखनिरोधः।

virāga *m* - бесстрашие, равнодушие, безразличие;

तत्र कतमा दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपत्? एष एवार्याष्टाङ्गमार्गः।

तद्यथा। सम्यग्दृष्टिर्यावत्सम्यक्समाधिरिति।

इदमुच्यते दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदार्यसत्यमिति।

इमानि भिक्षवश्चत्वार्यार्यसत्यानि।

इति दुःखमिति मे भिक्षवः पूर्वमश्रुतेषु धर्मेषु योनिशोमनसिकाराद्बहुलीकाराज्ज्ञानमुत्पन्नं चक्षुरुत्पन्नं विद्योत्पन्ना

भूरिरुत्पन्ना मेधोत्पन्ना प्रज्ञोत्पन्ना आलोकः प्रादुर्भूतः।

anu√sru V U. - слышать;

dharmā *m* – положение, состояние, правило, закон, законность, долг, обязанность, религия, нравственное достоинство, благочестие, праведность, добродетель; *buddh.* элементарная единица психики субъекта, носитель одного качества; характерная черта, свойство, качество; идея;

yoniśas *adv.* - полностью, вполне, совершенно, совсем; основательно, тщательно;

manasi √kar VIII U. - принимать во внимание, вспоминать, обдумывать;

manasikāra *m buddh.* - сосредоточение ума;
bahulikāra *m buddh.* - большое усердие или старание;
ut√pad IV Ā. - возникать, рождаться, происходить, случаться, начинаться (*здесь aor.pass.*);
bhūri *f - buddh.* ум, разум, рассудок, интеллект;
medhā *f* - мудрость; ум, разум; мысль;
prajñā *f* - ум, разум; мудрость, знание;
āloka *n* - вид, взгляд; *buddh.* озарение;
prādur √bhū I P. - стать видимым, появиться, возникнуть;

अयं दुःखसमुदय इति मे भिक्षवः पूर्वमश्रुतेषु धर्मेषु योनिशोमनसिकाराद्बहुलीकाराज्ज्ञानमुत्पन्नं चक्षुरुत्पन्नं
विद्योत्पन्ना भूरिरुत्पन्ना मेघोत्पन्ना प्रज्ञोत्पन्ना आलोकः प्रादुर्भूतः।

अयं दुःखनिरोध इति मे भिक्षवः सर्वं पूर्ववद्यावदालोकः प्रादुर्भूतः।

इयं दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदिति मे भिक्षवः पूर्ववदेव पेयालं यावदालोकः प्रादुर्भूतः।

peyālam *adv. buddh.* - и так далее;

यत्खल्विदं दुःखं परिज्ञेयमिति मे भिक्षवः पूर्ववदेव पेयालं यावदालोकः प्रादुर्भूतः।

स खल्वयं दुःखसमुदयः प्रहातव्य इति मे भिक्षवः पूर्वमश्रुतेषु धर्मेषु सर्वं यावदालोक इति।

pra√hā III P. - оставлять, покидать, бросать;

स खल्वयं दुःखनिरोधः साक्षात्कर्तव्य इति मे भिक्षवः पूर्ववद्यावदालोक इति।

sākṣāt √kar VIII U. - видеть ч.-л. собственными глазами; *buddh.* понимать, осознавать;

सा खल्वयं दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपद्भाविताव्येति पूर्ववद्यावदालोक इति।

√bhāvaya (caus. om √bhū) - создавать, производить, оживлять, проявлять, осуществлять;

तत्खल्विदं दुःखं परिज्ञातमिति मे भिक्षवः पूर्वमश्रुतेषु इति पेयालम्।

स खल्वयं दुःखसमुदयः प्रहीण इति मे भिक्षवः पूर्वमश्रुतेति पेयालम्।

स खल्वयं दुःखनिरोधः साक्षात्कृत इति मे भिक्षवः पूर्वमश्रुतेति पेयालम्।

सा खल्वयं दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपद्भावितेति मे भिक्षवः पूर्वमश्रुतेषु धर्मेषु

योनिशोमनसिकाराद्बहुलीकाराज्ज्ञानमुत्पन्नं चक्षुरुत्पन्नं भूरिरुत्पन्ना विद्योत्पन्ना मेघोत्पन्ना प्रज्ञोत्पन्ना आलोकः
प्रादूर्भूतः॥

इति हि भिक्षवो यावदेव मे एषु चतुर्ष्वार्यसत्येषु योनिशो मनसि कुर्वतो एवं त्रिपरिवर्तं द्वादशाकारं
ज्ञानदर्शनमुत्पद्यते, न तावदहं भिक्षवोऽनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबुद्धोऽस्मि इति प्रतिज्ञासिषम्।

tri-parivarta *m* - три поворота: 1) понимание (*satya-jñāna*), 2) введение в действие (*krtya-jñāna*), 3)
осуществление (*krta-jñāna*);

ākāra *m* - форма, вид, выражение лица, внутреннее состояние; двенадцать видов получается, если
применить эти три поворота к каждой благородной истине.

prati√jñā XI P. - признавать, соглашаться, обещать;

न च मे ज्ञानदर्शनमुत्पद्यते।

यतश्च मे भिक्षव एषु चतुर्ष्वार्यसत्येष्वेवं त्रिपरिवर्तं द्वादशाकारं ज्ञानदर्शनमुत्पन्नम्, अकोप्या च मे चेतोविमुक्तिः,
प्रज्ञाविमुक्तिश्च साक्षात्कृता, ततोऽहं भिक्षवोऽनुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंबुद्धोऽस्मि इति प्रतिज्ञासिषम्।

akopya *buddh.* - твердый, устойчивый, непоколебимый; постоянный, неизменный, несомненный;

ज्ञानदर्शनं मे उदपादि।

क्षीणा मे जातिः, उपितं ब्रह्मचर्यम्, कृतं करणीयम्, नापरस्माद्भवं प्रजानामि॥